



76 साल के मोदी की जिंदगी के वो पड़ाव, जिन्होंने बदली कहानी

नई दिल्ली(ए)। 17 सितंबर 2026 को नरेंद्र दामोदरदास मोदी 76 साल के हो जाएंगे। गुजरात के मेहसाणा जिले के वडनगर में 1950 में जन्मे मोदी का जीवन एक ऐसी असाधारण यात्रा की कहानी है, जिसमें एक छोटे शहर से निकला व्यक्ति धीरे-धीरे संगठन की सीढ़ियां चढ़ते हुए देश की सबसे बड़ी राजनीतिक जिम्मेदारी तक पहुंचा। उनकी कहानी को सिर्फ प्रधानमंत्री बनने से समझना अधूरा होगा; इसके पीछे वडनगर का बचपन, परिवार की चाय की दुकान पर काम का अनुभव, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के साथ गहरा जुड़ाव, भारतीय जनता पार्टी में संगठनात्मक जिम्मेदारियां और गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में करीब 13 साल का लंबा, परिवर्तनकारी दौर है। इन सभी पड़ावों ने मिलकर उस राजनीतिक सफर की नींव रखी, जिसका अगला पड़ाव 2014 में प्रधानमंत्री पद बना।

नरेंद्र मोदी का शुरुआती जीवन वडनगर में एक साधारण परिवार में बीता।



प्रधानमंत्री कार्यालय की आधिकारिक जीवनी के मुताबिक, उन्होंने अपनी पढ़ाई के साथ-साथ परिवार की चाय की दुकान पर भी काम किया। यह वही दौर था जब वडनगर एक छोटे कस्बे के रूप में उनके जीवन का केंद्र था। बचपन का यह अनुभव बाद में मोदी की सार्वजनिक छवि का एक अहम हिस्सा बना। उनकी

गतिविधियों में हिस्सा लिया और 1972 में प्रचारक बने। संगठन के साथ काम करते हुए उन्होंने लंबे समय तक गुजरात में जमीनी स्तर पर काम किया, जिसने उनकी संगठनात्मक क्षमता को निखारा और आगे चलकर उनकी राजनीतिक यात्रा में काम आया। बीजेपी के साथ उनकी सक्रिय राजनीतिक भूमिका बढ़ती गई और गुजरात की राजनीति में उनका कद मजबूत होता गया। नरेंद्र मोदी के जीवन का सबसे बड़ा राजनीतिक मोड़ 7 अक्टूबर 2001 को आया, जब उन्होंने गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। उस समय गुजरात 2001 के विनाशकारी भूकंप सहित कई चुनौतियों से गुजर रहा था। मोदी मई 2014 तक गुजरात के मुख्यमंत्री रहे, जो किसी भी मुख्यमंत्री के रूप में राज्य में उनका सबसे लंबा कार्यकाल रहा।

2014 का लोकसभा चुनाव नरेंद्र मोदी के राजनीतिक जीवन का निर्णायक अध्याय बना। बीजेपी ने उन्हें प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बनाया और उनके नेतृत्व में

पार्टी को पूर्ण बहुमत मिला। 26 मई 2014 को नरेंद्र मोदी ने पहली बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली, और वे आजाद भारत में जन्म लेने वाले पहले प्रधानमंत्री भी बने। वडनगर से शुरू हुई उनकी कहानी अब राष्ट्रीय सत्ता के केंद्र दिल्ली तक पहुंच चुकी थी। 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने एक बार फिर उनके नेतृत्व में पूर्ण बहुमत हासिल किया और नरेंद्र मोदी ने दूसरी बार प्रधानमंत्री पद की जिम्मेदारी संभाली। इसके बाद 2024 का लोकसभा चुनाव आया, जिसके बाद 9 जून 2024 को नरेंद्र मोदी ने लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली, जो उनके राष्ट्रीय राजनीतिक सफर का एक और महत्वपूर्ण पड़ाव था। 17 सितंबर 2026 को नरेंद्र मोदी 76 साल के हो जाएंगे, लेकिन उनके लिए यह जन्मदिन सिर्फ उम्र का एक आंकड़ा नहीं है। अक्टूबर 2001 में गुजरात के मुख्यमंत्री बनने से लेकर अब तक सरकार के मुखिया के रूप में उनके सार्वजनिक जीवन को 25 साल पूरे होने का दौर भी चल रहा है।

पीएम मोदी को शरद पवार समेत कई विपक्षी नेताओं ने दी जन्म दिन की शुभकामनाएं

नई दिल्ली, (ए)। पीएम नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के अवसर पर विपक्षी दलों के प्रमुख नेताओं ने उन्हें शुभकामनाएं दीं। सभी ने पीएम मोदी के अच्छे स्वास्थ्य और लंबी उम्र की कामना की। एनसीपी-एसपी के प्रमुख शरद पवार ने लिखा- भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। आपके अच्छे स्वास्थ्य और लंबी उम्र की कामना करता हूं।

डीएमके प्रमुख एमके स्टालिन ने एक्स पर लिखा- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। उनके अच्छे स्वास्थ्य, खुशी और लंबी उम्र की कामना करता हूं। सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भी पीएम मोदी को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने लिखा- प्रधानमंत्री जी को जन्मदिन की बधाई और स्वस्थ व सक्रिय सार्थक जीवन के लिए शुभकामनाएं। वहाईएसआईआर कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष वहाईएस जगन मोहन रेड्डी ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी को जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। ईश्वर उन्हें उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु और राष्ट्र की सेवा करने की शक्ति प्रदान करें। तमिलनाडु के सीएम और टीवीके के प्रमुख जोसेफ विजय ने पीएम मोदी के जन्मदिन पर कहाकि मैं पीएम नरेंद्र मोदी को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, जो एक मजबूत भारत बनाने के लिए पूरी निष्ठा से नेतृत्व कर रहे हैं। मैं पूरे दिल से आपके अच्छे स्वास्थ्य और लंबी उम्र की कामना करता हूं। झामुमो सीएम हेमंत सोरेन ने लिखा- देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जन्मदिन की अनेक-अनेक बधाई, शुभकामनाएं और जोहार। मरांग बुरु आपको सदैव उत्तम स्वास्थ्य और सुदीर्घ जीवन प्रदान करें, यही कामना करता हूं। शिवसेना-यूबीटी की नेता प्रियंका चतुर्वेदी ने लिखा- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। मैं उनके अच्छे स्वास्थ्य और हमेशा खुश रहने की कामना करती हूं।

बता दें पीएम मोदी का जन्म 17 सितंबर 1950 को गुजरात के वडनगर में हुआ था। वह 26 मई 2014 से प्रधानमंत्री के रूप में सेवा कर रहे हैं। वर्तमान में उनका तीसरा कार्यकाल चल रहा है। वह देश के सबसे लंबे समय तक लगातार चुने गए प्रधानमंत्री हैं। पीएम मोदी वाराणसी से सांसद हैं। वह 2001 से 2014 तक गुजरात के मुख्यमंत्री रहे थे। इस साल सार्वजनिक जीवन में उनके 25 साल भी पूरे हो रहे हैं।

सुरक्षाबलों ने देर रात 2 आतंकियों को मार गिराया

जम्मू(ए)। जम्मू और कश्मीर में सुरक्षाबलों द्वारा आतंकवादियों का सफाया जारी है। सुरक्षाबलों को बुधवार को बड़ी सफलता मिली, जब देर रात हुए एक ऑपरेशन में दो आतंकवादियों को मार गिराया गया। हालांकि, इनकी अब तक पहचान नहीं हो सकी है। इससे पहले, कश्मीर के बडगाम में लश्कर के एक कमांडर को भी डेर किया गया था। ऊधमपुर जिले में बुधवार देर रात सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच मुठभेड़ हुई। लंबे समय तक चली गोलीबारी में दो आतंकी डेर हो गए। सुरक्षाबलों को सोहन इलाके में तलाशी अभियान के दौरान आतंकियों की जानकारी मिली थी। सूत्रों के अनुसार, मजलता के जंगलों में संदिग्ध हलचल महसूस होने पर सेना, पुलिस और अर्धसैनिक बलों ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए गोलीबारी की। इसके बाद पूरे इलाके को घेर लिया गया और संदिग्धों की तलाश में सघन तलाशी अभियान शुरू किया गया।

यह कार्रवाई ऐसे समय में हुई है, जब घाटी में पुलिस अलर्ट मोड पर है। जम्मू कश्मीर के पुलिस महानिदेशक नलिन प्रभात ने हाल ही में सीमावर्ती जिले पुंछ में आतंकवाद के खिलाफ जारी अभियानों की समीक्षा की थी। पुंछ पुलिस ने बताया था कि डीजीपी ने जम्मू क्षेत्र के पुलिस महानिरीक्षक के साथ मिलकर खासकर पाकिस्तान आधारित लश्कर-ए-तैयबा के आतंकवादियों के संदर्भ में चल रहे अभियानों का जायजा लिया। 5 सितंबर को मारे गए लश्कर कमांडर की पहचान यासिर के रूप में हुई थी। वह लश्कर-ए-तैयबा के सुलेमान मूसा ग्रुप से जुड़ा था। हालांकि, ऐसी खबरें भी थीं कि वह ग्रुप से अलग होकर काम कर रहा था, जिस पर आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। सुरक्षा एजेंसियां लंबे समय से उसकी गतिविधियों पर नजर रख रही थीं और वह बडगाम के यौसमार्ग इलाके में सक्रिय था। इसके अलावा, राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने 12 सितंबर को जम्मू और कश्मीर के 10 ठिकानों पर छापे मारे थे। यह कार्रवाई लश्कर और उसके कथित मददगारों के नेटवर्क के मामले में की गई थी। एजेंसी ने बताया कि ये छापे कुपवाड़ा, बारामूला, सोपोर और कुलाम में मारे गए थे, जिनका उद्देश्य सीमा पार आतंकी साजिशों में मदद पहुंचाने के तरीकों का पता लगाना था। एनआईए ने जानकारी दी कि तलाशी के दौरान आपत्तिजनक सामग्री बरामद की गई है, जिसकी जांच की जा रही है और जुटाए गए अन्य सबूतों के साथ इसका मिलान किया जा रहा है।

नैतीन नबीन के मुंबई दौरे पर फडणवीस ने की तारीफ, कहा- नए नेतृत्व और ऊर्जा के प्रतीक हैं

कोलकाता(ए)। पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के दोनों गुटों के बीच पार्टी के नाम और चुनाव चिह्न को लेकर विवाद गहरता जा रहा है। दोनों गुट 6 अक्टूबर को होने वाले विधानसभा उपचुनाव में उतरने की तैयारी में हैं, लेकिन संभावना है कि वे तृणमूल कांग्रेस के नाम और मौजूदा चुनाव चिह्न के साथ चुनाव नहीं लड़ पाएंगे। पश्चिम बंगाल की नंदीग्राम और रेजीनगर विधानसभा सीटों पर होने वाले उपचुनाव से पहले तृणमूल कांग्रेस के दोनों गुटों के बीच पार्टी के नाम और चुनाव चिह्न को लेकर खींचतान तेज हो गई है। नामांकन दाखिल करने की

अंतिम तारीख बुधवार को थी, इसी दिन चुनाव आयोग ने दोनों गुटों को पत्र भेजकर दोपहर 3 बजे तक अतिरिक्त दस्तावेज जमा करने को कहा।

पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एसवाई कुर्शेला ने बताया कि ऐसे मामलों में फेसला लेने में समय लगता है। अगर चुनाव नजदीक हो तो आयोग आमतौर पर पार्टी के नाम और चुनाव चिह्न को फ्रीज कर देता है। इसके बाद दोनों गुटों को अस्थायी नाम और चुनाव चिह्न आवंटित किए जाते हैं। सुप्रीम कोर्ट के



वरिष्ठ वकील विवेक तन्खा ने भी इसी संभावना से सहमत जताई। उन्होंने कहा कि ऐसे मामलों में आम तौर पर आयोग चुनाव चिह्न को फ्रीज करता है और इसके लिए कई स्तरों पर निर्णय प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। चुनाव आयोग दोनों गुटों से अतिरिक्त दस्तावेज मांग चुका है। आयोग दोनों पक्षों को एक बार फिर

सुनवाई के लिए बुला सकता है। रघुनाथगंज के विधायक अखरज्जमां ने बताया कि आयोग ने अतिरिक्त दस्तावेज जमा करने के लिए दोपहर 3 बजे तक का समय दिया था और उन्हें यह भी बताया गया कि गुरुवार को एक और सुनवाई हो सकती है। उनके मुताबिक, चुनाव चिह्न का आवंटन 19 सितंबर तक पूरा होना जरूरी है। पिछले शनिवार को मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार की अगुवाई में चुनाव आयोग की पूरी पीठ ने दोनों गुटों के प्रतिनिधियों से मुलाकात की थी। एक गुट का नेतृत्व तृणमूल की संस्थापक और बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी कर रही हैं, जबकि दूसरे गुट की अगुवाई बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता रितब्रत बनर्जी कर रहे हैं। दोनों गुटों ने आयोग से अपील की थी कि उपचुनाव से पहले तृणमूल के चुनाव चिह्न और पार्टी की संघटनियों पर दावों को लेकर फैसला किया जाए। ममता बनर्जी के करीबी एक तृणमूल नेता ने आयोग पर जानबूझकर जटिलताएं पैदा करने का आरोप भी लगाया।

मतीजे-समधी को पार्टी से निकालने के बाद परिवारवाद को लेकर मायावती कंपथूज?

नई दिल्ली, (ए)। बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती ने भतीजे आकाश आनंद और समधी अशोक सिद्धार्थ को पार्टी से निकालने के बाद राजनीति में परिवारवाद पर बड़े दावे किए हैं। उन्होंने पिछले सप्ताह सोशल मीडिया पर दावा किया कि वह बसपा संस्थापक कांशीराम की तरह परिवारवाद के खिलाफ हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि वह कांशीराम की शिष्या होने के नाते परिवारवाद पर उनकी तरह ही डंटी हुई हैं।



गौरतलब है कि 2024 के लोकसभा चुनाव से कुछ महीने पहले मायावती ने भतीजे आकाश आनंद को बीएसपी में लेकर आईं। आकाश को पार्टी में नेशनल कोऑर्डिनेटर बनाया गया। इसके साथ ही पार्टी को मैसज चला गया कि मायावती बसपा की कमान आकाश आनंद को ही सौंपेंगी। हालांकि उन्हें लोकसभा चुनाव में ही पार्टी की बड़ी जिम्मेदारियों से हटा दिया गया। 2026 अगस्त में एक बार फिर से यूपी विधानसभा चुनाव को देखते हुए आकाश आनंद को लॉन्च किया गया, लेकिन उनकी दो रैलियों के बाद ही उन्हें पार्टी से पूरी तरह बाहर कर दिया गया। इससे मैसज मिलता है कि मायावती अपने भतीजे आकाश को पार्टी में सेट करने का प्रयास करती रहीं, लेकिन अब जब वह उन्हें बाहर कर चुकी हैं, तो पार्टी में परिवारवाद नहीं होने की बात कह रही हैं।

मायावती एक तरफ जहां कहा है कि उनके छोटे भाई आनंद कुमार के दोनों बेटों आकाश आनंद और ईशान आनंद को अब बीएसपी में कोई भी पद नहीं दिया जाएगा। वहीं दूसरी तरफ मायावती यह भी कह रही हैं कि आनंद

कुमार चाहे तो अपनी इकलौती बेटी कुमारी दीपिका आनंद को पार्टी में जिम्मेवारी सौंप सकते हैं। हालांकि वह यह भी कह रही हैं कि लॉ की पढ़ाई कर रहीं दीपिका की ईमानदारी को परख की जाएंगी।

मायावती खुद के महिला होने की बात को आगे कर परिवारवाद पर रियायत मांग रही हैं। कह रही हैं कि उन्होंने शादी नहीं की इसलिए उन्होंने अपने छोटे भाई आनंद कुमार को अपने साथ रखा, जो कि उनकी देखभाल के साथ पार्टी का भी काम देखते हैं। अब सवाल यह उठता है कि जब मायावती जैसी ताकतवर नेता खुद स्वीकार कर रही हैं तो सवाल यह है कि वह फिर किस हैसियत से नारियों को आत्मनिर्भर बनने का संदेश दे पाएंगी। एक सवाल यह भी उठता है कि अगर मायावती परिवारवाद के खिलाफ रहीं तो उन्होंने भतीजे आकाश आनंद की शादी के लिए पार्टी के सांसद अशोक सिद्धार्थ की बेटी को क्यों चुना।

हाल ही में यूपी बसपा के इकलौते विधायक उमाशंकर सिंह का असामयिक निधन हो गया था। उनके

अंतिम दर्शन करने पहुंची मायावती ने कहा था कि उनके इकलौते बेटे को राजनीति में लॉन्च करेंगी। इसके बाद लखनऊ में हुई बैठक में उमाशंकर सिंह के बेटे प्रिंस युकेश अग्रिम पंक्ति में बैठे दिखे। अब सवाल उठता है कि जब मायावती पार्टी में किसी भी स्तर पर परिवारवाद के खिलाफ हैं तो भला वह प्रिंस युकेश को किस हैसियत से चुनाव में टिकट देने का मन बना रही हैं, जबकि युकेश अब तक किसी भी राजनीतिक कार्यों में खास सक्रिय नहीं रहे हैं।

परिवारवाद को लेकर मायावती के इन फैसलों को देखने के बाद कई तरह के सवाल उठ रहे हैं, जो मायावती पिछले दो साल से भतीजे को पार्टी की कमान सौंपने की पूरी प्लानिंग कर रही थीं, उन्हें अचानक से कांशीराम के सिद्धार्थ कहां से याद आ गए। अगर वाकई वह परिवारवाद के खिलाफ हैं तो उनके भाई आनंद कुमार अभी भी पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कैसे हैं। इसके अलावा मायावती की भतीजी कुमारी दीपिका को पार्टी में अभी से लाने की इजाजत अभी से क्यों दे रहे हैं।

मुस्लिम युवक की गिरफ्तारी से लव जिहाद का आरोप

लखनऊ(ए)। जनेश्वर पार्क के पास से वायरल हुए एक वीडियो ने पहले हड़कंप मचाया और अब एक नया मोड़ ले लिया है। वीडियो में दिख रहा है कि एक युवती कार के सामने खड़ी होकर उसे रोकने की कोशिश करती है, लेकिन कार नहीं रुकती और युवती को बोनट पर टांगकर करीब सौ मीटर चलती रहती है। फिर एक झटके में युवती गिर जाती है और कार लेकर युवक फरार हो जाता है। वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने तेजी से कार्रवाई की तो पता चला कि युवती हिंदू है और कार चलाने वाला युवक मुस्लिम। शुरुआत में इसे हिट एंड रन का मामला माना गया, लेकिन अब उत्तर प्रदेश महिला आयोग की उपाध्यक्ष अपर्णा यादव ने इसे लव जिहाद बताया है, हालांकि पुलिस को दी गई तहरीर में युवती ने लव जिहाद जैसा कोई आरोप नहीं लगाया है।

महिला आयोग की उपाध्यक्ष अपर्णा यादव ने दावा किया कि यह मामला हिट एंड रन का नहीं बल्कि लव जिहाद का है। उन्होंने अपनी टीम को भी घटना की तह तक जांच करने के लिए लगाया है और पुलिस अधिकारियों से बात की, जिसके बाद आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया। अपर्णा यादव ने बताया कि आरोपी मुस्लिम है और उसका नाम शहनवाज है। उसने हिंदू नाम यश ठाकुर बताकर युवती को प्रेम जाल में फंसाया था। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर इस तरह के अराजकतत्व लड़कियों को गुमराह करने में लगे हैं तो सरकार और शासन उनका अच्छे से इलाज करेगी। पुलिस के मुताबिक, यह घटना बुधवार सुबह करीब 6:30 बजे जनेश्वर मिश्र पार्क के गेट नंबर 4 के पास हुई। पीछिठा मूल रूप से हरदोई की रहने वाली है और एक निजी कंपनी में काम करती है। वह गोमतीनगर में किराए के मकान में रहती है। बुधवार सुबह वह अपनी बुआ और बहन के साथ चाय पीने गई थी। इसी दौरान उसका पूर्व परिचित, दुबगा अंधे की चौकी के पास रहने वाला बिल्डिंग ठेकेदार शहनवाज अपनी कार से पहुंचा, जिसके साथ उसका दोस्त दानिश और एक अन्य लड़की भी थी। युवती का आरोप है कि उसे देखकर शहनवाज और उसके दोस्त ने गाली-गलौज शुरू कर दी और विरोध करने पर कार से भागने लगे। जब उसने रोकने की कोशिश में कार के आगे खड़ी हो गई, तब भी उन्होंने कार अग्रे बढ़ा दी और वह बोनट पर लटक गई। दोनों ने कार की रफ्तार और बढ़ा दी और करीब 100 मीटर तक उसे कार पर टांग कर घूमे।

